...व्यवस्थित रूप में चित्र में दर्शाया गया है।

पाठ्यक्रम मूल्यांकन के स्वरूप
(ASPECT OF CURRICULUM EVALUATION)

1. निर्माणात्मक मूल्यांकन (Formative Evaluation)—निर्माणात्मक मूल्यांकन वह है जिसका प्रयोग पाठ्यक्रम के विकास की प्रक्रिया के दौरान किया जाता है। इस मूल्यांकन के परिणाम पाठ्यक्रम के विकास करने वाले व्यक्तियों को पृष्ठपोषण (Feedback) प्रदान करते हैं तथा पाठ्यक्रम में खोजे गये दोषों व कमियों को दूर करने में सहायता करते हैं।

2. संकल्पनात्मक या योगात्मक मूल्यांकन (Summative Evaluation)—संकलनात्मक मूल्यांकन किसी पाठ्यक्रम के पूरा होने के पश्चात् प्रशिक्षु की सम्प्राप्ति की पहचान व ग्रेडिंग करना है। इस प्रकार पाठ्यक्रम समाप्ति के किसी लम्बे काल, सत्र, सेमेस्टर अथवा एक वर्ष, छः माह के बाद परीक्षण लिये जाते हैं।

मूल्यांकन परिणामों की व्याख्या (Interpretation of Evaluation Result)—पाठ्यक्रम मूल्यांकन के परिणामों की व्याख्या के अनेक प्रयोजन हैं; जैसे—निर्देशन, सम्प्राप्ति आदि। इसमें प्रशिक्षुओं के प्रतिनिधि सगणकों को लेकर पाठ्यक्रम के कुछ अंशों की सफलता की परीक्षा लेते हैं। मूल्यांकन परिणामों की व्याख्या हेतु कसौटियाँ हैं—

(i) विषय-वस्तु (Content)—विभिन्न विषयों की विषय-वस्तु पाठ्यक्रम के प्रयोजनों के लिए कहाँ तक सार्थक है ?

(ii) अनुभव (Experience)—पाठ्यक्रम द्वारा छात्र की विशेष विषय के लिए आवश्यक अनुभव कहाँ तक प्राप्त होते हैं ?

(iii) कौशल (Skill)—पाठ्यक्रम के क्रियात्मक उद्देश्यों के अनुसार छात्रों में विभिन्न कौशलों, पढ़ने-लिखने, निरीक्षण, प्रत्यक्षीकरण, टंकण, कारीगरी, सन्देशवाहन आदि अनेक गामक क्रियाओं व कौशलों का विकास कहाँ तक होता है ?

(iv) अभिवृत्तियाँ व मूल्य (Aptitude and Value)—पाठ्यक्रम के द्वारा वांछनीय अभिवृत्तियो व मूल्यों का विकास कहाँ तक हुआ है ?

(v) विभिन्न क्षेत्र (Various Scope)—पाठ्यक्रम द्वारा छात्रों में चिन्तात्मक अनुभूतिजन्य और मनोगामक क्षेत्रों में कहाँ तक विकास हुआ है ?

पाठ्यक्रम मूल्यांकन का महत्त्व (Importance of Curriculum Evaluation)—**पाल हर्ड** ने अपने ग्रन्थ 'New Dimensions in Secondary School Sciences' में स्पष्ट किया है—पाठ्यक्रम मूल्यांकन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा शैक्षिक उद्देश्यों, विषय-वस्तु तथा अनुदेशन सामग्री का अधिगम तथा शिक्षण के लिए उपयोग तथा समय व व्यय के उपयोग का आभास होता है। अतः यह माना गया है कि पाठ्यक्रम मूल्यांकन का मुख्य कार्य पाठ्यक्रम की प्रासंगिकता तथा व्यक्ति व समाज पर प्रभाव का पता लगाना है।

पाठ्यक्रम मूल्यांकन का महत्त्व निम्न प्रकार से है—

(1) नवीन पाठ्यक्रम का विकास (Development of New Curriculum)—यदि इण्टरमीडिएट स्तर पर एक व्यावसायिक पाठ्यक्रम के लिए नई पाठ्य-वस्तु का विकास करना है तो एक भिन्न प्रणाली द्वारा वर्तमान पाठ्यक्रम का मूल्यांकन हमारी वर्तमान आवश्यकता को पूरा करने हेतु लाभदायक होगा।

Scanned by CamScanner

वस्तु, शिक्षण विधि, शिक्षण सामग्री अथवा मूल्यांकन विधि की उपयोगिता सम्बन्धी जानकारी प्राप्त करने हे
साक्षात्कार योजना, प्रश्नावली अथवा श्रेणी मापनी आदि उपयुक्ततम मापन उपकरण अथवा विधि का निर्मा
करता है। इसके उपरन्त विशेषज्ञों की सम्मति एकत्रित करता है और अन्ततः यह निर्णय करता है कि शि
नीति, योजना या कार्यक्रम, पाठ्यवस्तु, शिक्षण विधि, शिक्षण साधन अथवा मूल्यांकन विधि को आगे चालू र
जाए अथवा नहीं और यदि चालू रखा जाए तो किस रुप में।

उपरोक्त मूल्यांकन के प्रकारों के आधार पर शिक्षा से सम्बन्धित उक्त पदों में परिस्थितियों के अनुकू
जाँच एवं परिवर्तन करके शिक्षा की सम्पूर्ण व्यवस्था को शक्तिशाली बनाया जा सकता है।

Scanned by CamScanner